वर्तमान में गांधीवादी विचारधारा का महत्व

डॉ0 आलोक कुमार कश्यप*

सारांश

भारत की समाजिक और राजनीतिक पृष्ठभूमि में महात्मा गॉधी को सबसे प्रमुख विचारक माना जा सकता है। जिन्होंने यहॉ की सामाजिक संरचना, नैतिक आदर्शो तथा राजनीति को एक नया मोड़ देने का प्रयत्न किया। गॉधी जी ने सत्य, अंहिसा के सिद्वान्तो के आधार पर मानवता को नव–निर्माण की नई राह दिखायी। वस्तुतः गॉधी जी शुद्व राजनीतिक विचारक नही थे वरन सच्चे कर्म योगी थे। वे वर्तमान भारत के राष्ट्र निर्माता थे और उन्हें भारतवासी 'राष्ट्रपिता अथवा बापू' के नाम से याद करते है। उनके उचे चरित्र और धार्मिक संज्ञान को देखकर ही रविन्द्रनाथ टैगोर ने उन्हें 'महात्मा' के नाम से संबोधित किया और आज भी वे 'महात्मा गॉधी' के नाम से लोकप्रिय है। इन्होंने विदेशी शासकों पर शस्त्रों–अस्त्रों द्वारा नही अपितु अंहिसा तथा सत्य के बल पर विजय प्राप्त की। आजीवन स्वयंसेवकों के रुप में सम्पूर्ण मानव जाति के प्रति समर्पित गॉधी जी ने प्रत्येक दृष्टि से मानवता की सेवा की और समाज को सद्मार्ग पर अग्रसरित होने के लिए प्रेरित किया। सेवा, परोपकार, दया, शक्ति, प्रेम, अंहिसा, सत्य आदि के शिक्षा के साथ–साथ गॉधी जी ने ब्रह्मचर्य तथा सर्वधर्म की महत्ता का भी बोध कराया है। इतना ही नही, गॉधी जी ने अपने जीवन के खट्टे–मिठे और कड़वे अनुभवों के आधार पर समाज को शिक्षा देने की कोशिश की है।

गांधी जी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य अहिंसक, गैर शोषण सामाजिक व्यवस्था स्थापित करना और अन्य उद्देश्य इसके सहायक है। इनके अनुसार शिक्षा केवल पढ़ने लिखने की योग्यता नहीं है वरन मस्तिष्क, शरीर और आत्मा का चहुमुखी विकास करना है। यह शिल्प प्रधान है जिसमें हस्तकला की हिस्सेदारी मुख्य है शिल्प आधारित शिक्षा की अवधारणा बेरोजगारी के खिलाफ एक बीमा सुरक्षा है शिल्पकेन्द्रित शिक्षा की उनकी अवधारणा अहिंसा के सिद्वान्त आधारित है जिसमें प्रत्येक सीखने वाले की निजंता का सम्मान किया जाता है और जिसमें श्रम की गरिमा तथा सामुहिक कार्य की शिक्षा दी जाती है।

अंग्रेजो के आवागमन ने भारतीय विचारको को प्रभावित किया इन्होने पश्चिमी प्रभावो के सम्बन्ध में भारतीय परम्पराओं को पुर्नजीवित एवं परिष्कृत किया जिनसें नये अवधारणों का जन्म हुआ। गांधी जी ने अपने विचारो को अपने सोचने के अनुसार विकसित किया। कुछ अवधारणाओं को छोड़ा। कुछ को महत्वपूर्ण बताया तथा मूल्यों का उच्चीकरण किया। गांधी जी के विचारो पर उपनिषदों एवं गीता का वृहद प्रभाव रहा है। इसके साथ ही साथ पश्चिमी विचारको रस्किन टालस्टाय, थोरो जैसे विद्वानों से प्रभावित नजर आये। गांधी जी अपने दिन प्रतिदिन के कार्यो एवं अनुभवों द्वारा कुछ अवधारणाओं नवीनता दी यथा, सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, सर्वोदय, विश्व बन्धुत्व, सामाजिक न्याय।

गांधी जी कहते है कि ''जो मूल्य आध्यामिक पवित्रता से संवारे नही जाते वे भय और कायरता अथवा भोग और आक्रामकता पैदा करते है जीवन सार्थक और मूल्यवान हो इसके लिए जरूरी है कि घोर भौतिकवादी मूल्य को आध्यात्म के बंधन में रखा जाय। अध्यात्म अन्ध..विश्वास नहीं, विश्वास की पराकष्ठा है। यह संसार के बाहर की खोज नहीं वरन् संसार के समस्त के भीतर समाई सत्ता के प्रति जागृति है। इसलिए वे कहते है कि गीता राह दिखाती है, राम मेरा लक्ष्य है, पर मेरे जीवन में श्रेष्ठतम मूल्य जो है वह ईशावस्यमिदम् के विश्वास से संचालित होता है। यह मनुष्य से बड़ी सत्ता में विश्वास देने की प्रेरणा देता है। ताकि छोटों को भी सम्मान पूर्वक स्वीकृति देने की शक्ति पैदा हो सके। यह जगत और उसमें जीने की कला का पोषक है जो सिखाता है कि लूट कर लेने की जगह, त्यागपूर्ण प्राप्ति ही मानव मूल्य है ।

गांधी जी सत्य को आस्था का केन्द्रबिन्दु मानते है। अहिंसा के सिद्वान्त को व्यक्तिनिष्ठता के स्थान पर समाज निष्ठता तक बढ़ाया। अहिंसा मानवता का प्रतीक है जिसके द्वारा सभी प्राणियों के प्रति द्वेष का अन्त है। अर्थात सभी जीवों के प्रति सद्भाव को कायम रखना। अहिंसा के पथ पर चलने के अटूट धैर्य एवं साहस की आवश्यकता है अर्थात व्यक्ति को अपने सम्पूर्ण क्रिया कलापो पर अंकुश लगाना, जो मानवता एवं समाज कल्याण के विरूद्ध है। अहिंसा के प्रयोग में कोई कमजोंरी नही वरन् एक शक्ति प्रदर्शित होती है। गांधी जी अहिंसा को सामाजिक न्याय से जोड़ा, गांधीजी के शब्दों में ''मेरे विचार से जनतंत्र उसे कहते है जिनमें कमजोर से कमजोर को व्यक्ति को भी वही अधिकारी एवं अवसर मिले जो सबसे अधिक शक्तिशाली को प्राप्त हो यह केवल अहिंसा द्वारा प्राप्त हो सकता है।'' एक अन्य सन्दर्भ गांधी जी अहिंसा को अनन्त प्रेम एवं असीम कष्ट सहने की क्षमता से जोड़ते है। गांधी जी का सत्याग्रह में अटूट विश्वास था। गांधी जी ने सत्याग्रह का प्रयोग दक्षिण अफ्रिका में किया। बाद में उन्होंने इसको वैचारिक एवं सैद्वान्तिक रूप प्रदान किया उन्होंने सत्याग्रह को सत्ता के अन्यायपूर्ण प्रतिरोध के अमोघअस्त्र के रूप में विकसित किया। अपने राजनीतिक आन्दोलनो, असहयोग, सविनय एवं भारत

* असिस्टेन्ट प्रोफेसर, समाजशास्त्र, एम0बी0एस0पी0जी0 कालेज गंगापुर, वाराणसी, उ0प्र0

छोड़ो आन्दोलनो में इसका विशद एवं व्यापक प्रयोग किया। इसके द्वारा विश्व के सर्वाधिक शक्तिशाली साम्राज्य को नतमस्तक किया। गांधी जी के सर्वोदय में सबका उत्थान है। इस उत्थान में शारीरिक एवं भौतिक आयाम के साथ–साथ आध्यात्मिक चेतना भी सम्मिलित है। जो विलासतापूर्ण जीवन शैली पर अंकुश लगाता है। फिर भी गांधी ने सर्वोदय का अर्थ सबके कल्याण को माना। ऐसे कल्याण की प्रतिपूर्ति चैतन्य प्रक्रिया द्वारा सम्भव हो सकती है।

महात्मा गांधीजी सच्ची शिक्षा उसे मानते थे जो बालक की आध्यत्मिक मानसिक और शारीरिक शक्तियों को विकसित करती है। वे चाहते थे कि शिक्षा द्वारा मनुष्य के शरीर मस्तिष्क हृदय तथा आत्मा की सारी शक्तियॉ पूर्ण रूप में हो। इन शक्तियों के विकास में समग्र एवं संतुलन की दृष्टि होनी चाहिए

उन्होंने अपना शिक्षा दर्शन ग्रामीण समाज में श्रमिकों के बच्चों की आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं को समाहित करके विकसित किया। शारीरिक श्रम को महत्वपूर्ण बताया क्योंकि श्रमिकों के पास यही एक मात्र पूँजी होती है। औद्योगीकरण की प्रक्रिया में श्रम को अमानवीय स्वरूप में देखा जाता है और उसे क्रय–विक्रय की वस्तु बना दिया जाता है। गांधी जी की दृष्टि में आधुनिक मशीनी सभ्यता अनैतिक थी और अन्ततः विनाश की ओर ले जायेगी। विनाश की इस प्रक्रिया को जड़ से समाप्त करने एवं भारत के नवनिर्माण हेतु बुनियादी शिक्षा के सिद्वान्त का प्रतिपादन किया।

विश्व बन्धुतत्व की भांवना गांधी जी के सत्य एवं अहिंसा सिद्वान्त पर आधारित है। यद्यपि ''वसुधैव कुटम्बकम'' केवल भारत की दार्शनिक अभिव्यक्ति ही नहीं है बल्कि विश्व के सभी देशों के साथ भारत के पारस्परिक सद्भाव, मैत्रीपूर्व सम्बन्ध, अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना शक्ति का द्योतक है। इस सम्बन्ध मे गांधी जी का कहना है कि पहले हम अपनी संस्कृति का सम्मान करना सीखे और उसे आत्मसात करे दूसरी संस्कृतियों के सम्मान की, उनकी विशेषतओं को समझने और स्वीकार करने की बात उसके बाद आ सकती है।

गांधी जी समतामूलक समाज की स्थापना के लिए कटिबद्ध थे इसलिए उनके आर्थिक मूल्य, सत्य एवं अहिंसा पर आधारित थे। वे धन एकत्र करने के लिए धनोपार्जन करने के कट्टर विरोधी थे। गांधी जी ने कहा में चाहता हूँ कि धनी लोग गरीबों के ट्रस्टी बनकर उसके लिए अपने धन का इस्तेमाल करें।''

गांधी जी पर्यावरणीय मूल्यों के प्रति चैतन्य थे। व्यक्ति की जरूतों की आवश्यकता से अधिक विस्तार से प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव पड़ता है। पर्यावरण को क्षति पहुँचती है। वे विलासतापूर्ण जीवन शैली के के विरोधी थे एवं सादा जीवन एवं उच्च विचार के समर्थक थे। वे सादगीपूर्ण एवं शाकाहारी जीवन व्यतीत करने में विश्वास रखते थे। उनका दृढ़ विश्वास था कि शाकाहारी जीवन पर्यावरण के लिए मुश्किल नहीं खड़ा करेगा। खादी पहनना भी गांधी के सिद्वान्तो में से एक है जो मितव्ययता का पैमाना है।

वैज्ञानिक अनुसंधान की आधुनिक परम्परा यह मानती है कि हमारी मूल्य प्रणाली या नैतिकता हमारी अवधारणा से प्रभावित होती है। इस प्रकार हम देखते है कि शिक्षकों को यह सौभाग्य प्राप्त है कि ये देश के भावी नागरिकों को परिष्कृत करने का कार्य करते है। इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षकों को प्रोत्साहित किया जाय और उनमें ठोस वैचारिक परविर्तन लाया जाय। वैचारिक दृष्टिकोण के इस बदलाव से ही शिक्षकों में वह अदम्य उर्जा का संचार होगा जो भौतिक या आर्थिक लाभ के दृष्टिकोण से कभी पैदा नहीं किया जा सकता। शिक्षक के अपने अन्दर निहित उर्जास्रोत का प्रवाह विद्यार्थियों की ओर पूरी निष्ठा से करना होगा। शिक्षक का कार्य केवल शिक्षण नहीं अपितु दिग्दर्शन भी है। आध्यात्मिक चेतना और पूर्ण समर्पूण से प्रेरित आत्मबल ही दी जाने वाली शिक्षा को प्रभावी बना सकता है। इसके लिए गांधीवादी विचारधारा को अपनाना होगा उनके सादगी पूर्ण जीवन से प्रेरणा लेकर मितव्ययी जीवन शैली अपनाकर सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह एवं सर्वोदय दर्शन के द्वारा सम्पूर्ण मानवता का पोषक करना हम सभी का कार्य एवं कर्तव्य है।

इस प्रकार गाधीजी के उक्त विचारों को यदि आतमसात किया जाय तो निश्चित ही समाज और राष्ट्र का विकास किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. कालेलकर, काका साहब (1983), गांधी व्यक्तित्व, विचार और प्रभाव सस्ता सहित्य मण्डल नई दिल्ली
2. दत्त धीरेन्द्र मोहन (1973) महात्मागंधी का दर्शन , बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकदमी पटना पेज– 22
3. रामश्रय राय (1986) कांटेम्पोरेरी क्राइसिम एण्ड गांधी, नई दिल्ली
4. आर0एन0 अय्यर (1983) द माटर एण्ड पलिटिकल थाट आफ महात्मा गांधी, नई दिल्ली
5. यंग इण्डिया 1सितम्बर 1921
6. यंग इण्डिया 26 मार्च 1937
7. आहुजा राम, सामाजिक समस्याएं, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर,
8. महाजन धर्मवीर, महाजन कमलेश (2004), भारतीय समाज, मुद्दे एवं समस्याएं, विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली

●